

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वनविहंग तमधायक नमः ॥ वनजीवन

ॐ नमो गलयमय ॥ यथा ह्यनदः सन्ध्याजगत्तमस्य नद्यान्तः ॥ १ ॥ अवागमं दः
या भीमाः सद्यः अर्चयन्तः ॥ ममाहं विदुः कानि सन्निदि ॥ २ ॥ यमिस्तु कः शर्म
मे सद्यः वल्लभं नमस्तिष्ठान् ॥ ३ ॥ प्रायसावृत्तं न साहचर्यं वृत्तचिह्नं
श्रीर्षं नयं सकृद्विदुः शिवं विदुः ॥ ४ ॥ कदाचिन्नायनं दन्धनं कथं भानं
संयजः कृत्वाः वृत्तिं न निष्ठा नमस्तु कानि कमादुः ॥ ५ ॥ तिलिग्यां विविं निजदं मिथ

निवृत्ताङ्गा ॥ दिवातीति ॥ अहं नानिपद्यतां ॥ ६ ॥ द्यौः ॥ यथाः यथाः यथाः ॥ ७ ॥ अनीपिह्यं
विदुः शर्मनसर्वतीति ॥ अहं नो भूगर्शनं ॥ ८ ॥ मृथसर्वसंज्ञं ॥ ९ ॥ अहं नो भूगर्शनं ॥ १० ॥
अहं नो भूगर्शनं ॥ ११ ॥ अहं नो भूगर्शनं ॥ १२ ॥ अहं नो भूगर्शनं ॥ १३ ॥ अहं नो भूगर्शनं ॥ १४ ॥
अहं नो भूगर्शनं ॥ १५ ॥ अहं नो भूगर्शनं ॥ १६ ॥ अहं नो भूगर्शनं ॥ १७ ॥ अहं नो भूगर्शनं ॥ १८ ॥
अहं नो भूगर्शनं ॥ १९ ॥ अहं नो भूगर्शनं ॥ २० ॥ अहं नो भूगर्शनं ॥ २१ ॥ अहं नो भूगर्शनं ॥ २२ ॥
अहं नो भूगर्शनं ॥ २३ ॥ अहं नो भूगर्शनं ॥ २४ ॥ अहं नो भूगर्शनं ॥ २५ ॥ अहं नो भूगर्शनं ॥ २६ ॥
अहं नो भूगर्शनं ॥ २७ ॥ अहं नो भूगर्शनं ॥ २८ ॥ अहं नो भूगर्शनं ॥ २९ ॥ अहं नो भूगर्शनं ॥ ३० ॥

नमः ॥ अहं नो भूगर्शनं ॥ अहं नो भूगर्शनं ॥ अहं नो भूगर्शनं ॥ अहं नो भूगर्शनं ॥

मध्यद्वयानय मध्यमसुना ह्यनमसुना

五

सूयग ० कय

अनंदवैद्यानस्य

[illegible]

गुणवत्तुसंज्ञा

[illegible]

गृथना ना य ध्याना म

[illegible]

क १११ क १११ मा भव १ स्व १॥ द १॥ वि १॥ य १॥ क १॥ मा १॥ वि १॥ न्मा १॥ न १॥ क १॥
१॥ य १॥ मा १॥ न्मा १॥ न १॥ क १॥ वि १॥ न्मा १॥ न १॥ क १॥ वि १॥ न्मा १॥ न १॥ क १॥
१॥ य १॥ मा १॥ न्मा १॥ न १॥ क १॥ वि १॥ न्मा १॥ न १॥ क १॥ वि १॥ न्मा १॥ न १॥ क १॥
१॥ य १॥ मा १॥ न्मा १॥ न १॥ क १॥ वि १॥ न्मा १॥ न १॥ क १॥ वि १॥ न्मा १॥ न १॥ क १॥
१॥ य १॥ मा १॥ न्मा १॥ न १॥ क १॥ वि १॥ न्मा १॥ न १॥ क १॥ वि १॥ न्मा १॥ न १॥ क १॥
१॥ य १॥ मा १॥ न्मा १॥ न १॥ क १॥ वि १॥ न्मा १॥ न १॥ क १॥ वि १॥ न्मा १॥ न १॥ क १॥

श्रीगणेश

मथ वल्लहयानाम
पुमानिनावायुनह्यनामानि

[illegible]

मालि

कामस्य

न विन्दमं (शाकं) च न च न व क ॥ नीला लयल व प (अ) मं य (अ) वान स्य शाक का ॥ उन्मा
दन मा यन श्व लावन ॥ (शाक) लसु था ॥ स भादन श्व प (अ) मं य व वा ना ॥ य की कि ना ॥
न श्री १ य द्वा ल या य द्वा कम लाणी रु नि प्रिया ॥ ग र्वा ल श्री य म ॥ य (अ) क न्य श्व रु सु द ग
न ॥ को मा द की ग दा र व ॥ ज्ञान न्द क ॥ को मु रा म लि ॥ ग नू त्मान् ग नू उ ला श्री वि न म य
॥ स्र (अ) श्व न ॥ ना ग न का वि क न थ ॥ स्र य लु ॥ य न ग ग न ॥ ग मू नी ग ॥ य श्रु य मि ॥ शि

व ॥ श्रु ली म रु श्व न ॥ श्री श्व न ॥ ग र्वा ली शा न ॥ ग के न श्व लु (अ) र व न ॥ रु न श श्व
लु य न श्रु शि श्री यि नि (अ) म रु ॥ म रु (अ) रु ॥ क हि वा सा ॥ यि ना की य म था वि य ॥
॥ उ व ॥ क य दी श्री क ल ॥ नि नि क रु ॥ क याल रु द्वा वा म श्व म ला द वा वि न या रु मि
लावन ॥ क शा नू न गौ ॥ स र्व रु ॥ रु टि नी ल ला हि द ॥ रु न ॥ स न रु ना रु ग्य रु म
क मि य नान क ॥ ग रु य वा ॥ रु क नि य ॥ रु रु रु सी व य रु ॥ वा म क (अ) रु वा री

मः स्तुतु नृप उमा यतिः ॥ कथं दत्तं ॥ अथ कथं दत्तं ॥ पिना कः ॥ ज ब वं ॥ नृ ॥ प्रमथः ॥ य
॥ यात्रिषदात्रा श्रीं शांदा मुमा ननः ॥ विरुति कृति नृ ॥ अथ मंतिमादिक मंति ॥ अतिमा
लपिमा च वं या कथं मति मा नथा ॥ ॐ शिर्षं व वलिर्षं व कथा का मा वसा यि मा ॥ उ मा का या
यनी ॥ मोयी काली रु मव नी ॥ अथ ॥ शिवा रु वा नी नृ दा नी सर्व नी सर्व नन ला ॥ अथ ॥ वाच
नी दृग्ग म ज नी च छि का ॥ इति ॥ विनायक विद्युता ऊँ मा कु न गत्त प्रिया ॥ अथ ॥ कद

नृ लम्बलमा दन ग जानना ॥ कारिक थाम हा सन ॥ अथ कना व ज नन ॥
या व नी नन्दन ॥ स्कन्द ॥ स नानी नृ ॥ अथ रु रु ॥ वा क ले य ज्ञान क जि दि ॥ अथ ॥
शिखि वा रु न ॥ सा लो रु न ॥ अथ कि भ न ॥ कृमान ॥ को कृ पा नृ न ॥ ॐ लो म नृ त्या
मद्य वा विभा जा ॥ या क शा सन ॥ वृद्ध श वा ॥ स नानी न ॥ य नृ रु क ॥ य नन्दन ॥ ॥ जिष्
ल्लिखि र्ष रु ॥ अथ क ॥ अथ क म नृ दि व स्य मि ॥ स नानी ॥ अथ कृ दि द जी वा स वा व रु रु व

या ॥ वा शा व्य निःसूत्र य निर्वृत्ता वा निः १५ वी य निः १॥ ऊ म्भूत दी रु नि रु य १॥ स्वा ना क्ष म्भूत य न
१॥ स दु न्य ना दू श्व व न सु ना वा ल्म य वा रु न १॥ श्व ख कु ल १॥ स रु मा द स रु कौ न स्य १
दु प्रिया ॥ य लाम का भवी ल्या नी न म नी त्व म वा व नी । रु य उ श्व १॥ वा १॥ स ना मा न
लि न्द न व न ॥ श्या न्या सा धो वै क य न्मा ऊ य न्क १॥ पा क भा स नि १॥ नु ना व न ३॥ कु मा
रु क्क ना व ली उ म्भू व ल्म र्मा १॥ जा दि नी व ऊ म्भू श्या ल्म लि र्मा रि दू न म्भू वि १॥ श क क

टि १॥ स्व न् १॥ मा द क्षा लि र्मा नि र्द थो १॥ श्या म यान वि मा नो १॥ श्मि ना न दा द्या १॥ स न य य
१॥ श्या ल्म व म्भू द व स र्मा वी श्व स म्भू र्मा १॥ म न्दा कि नी वि य र्मा श्व न दी स न दी यि
का । म न्दः श्व म न्द र्मा दी न न्मा न १॥ स न्मा ल य १॥ य १॥ म न्द व न न्मा म न्दा न १॥ वा नि र्मा
न क १॥ स न्मा न १॥ क ल्म र्मा र्मा सि वा रु नि य न्द न ॥ स न ल्म मा न्मा व १॥ स न्मा व १॥ वा व
श्वि नी स न्मा । ना स न्मा र्मा श्वि न्मा द मा र्मा श्वि न्मा व ना र्मा ॥ श्वि र्मा व द्मा र्मा स न्मा १॥ स न्मा

उर्वशीमूखाः। उर्वशीमेति कायमाचिह्नं शनानि लोहमा॥ कुरु लोम दनावनय
 नायकथाः मी॥ ललाटदू (स्वैव मां द्या गन्ध वीक्षि दिव्यो कैसा॥ अग्निर्वै ध्वननावदि
 वीनिहा भ्रात्र नंदयः। कपीठ यानि हेलनी जान वदा सुनूनया म॥ बहिः शुष्मा
 कृष्णवत्समा (ध्वनिः कथं उषर्व्वः। आश्रया सा वरुहान् १ कृष्णान् १ पाव कां नल १
 ॥ प्रादि मा (ध्वनि वायु सखी लिखा वानां १३३ कृत्ति १। दिन ल्यन ना दू ग रु ध्वनना रयव

— श्रीश्रीसंज्ञाती

रुनः॥ सफाचिह्नं मूनाः १३ कृष्णिवरुहान् विरुवसू १३ विनयि कृमा वृष्ण वा उवाव
 उवा नलेश॥ वक्र दया को लकी ला वं विह मि १३ लिखा म्रिया। विष्णु मूर्ति (ध्वनिः कृत्ति
 १ सत्ताय १ स कृत्ति १ सभा॥ धर्मना १ विरुयति १ समवली धन नया १ कृत्ति नायम
 ताता नां मनीयमना शुभः। का ला द ल्यन १ अद्र दवा व वखमा १ कर्क १॥ नाक स १ क
 लय १ क वा ल्क वा दा १ अय अश्वन १ ना वि कृत्ति ना विन १ कर्क ना तिक वा ल १॥ या

दुष्कानः प्रत्यक्षं नो ज्ञेयं नानुवक्ष्यते ॥ पुनर्नो वक्ष्यते ॥ दृष्टं शीघ्रं दृष्टं विनिर्दिष्टं ॥ श्वः
 सनः ॥ स्यर्जना वायुर्मातृनिष्ठा सदा गतिः ॥ यत्तदध्वं न न्यवक्ष्यते न न्यवक्ष्यते न न्यवक्ष्यते ॥
 शस्त्रीयं मातृकमन्त्रं कृत्यात्समीपं नानुवक्ष्यते ॥ ननु स्वर्गं यत्तदध्वं न न्यवक्ष्यते न न्यवक्ष्यते ॥
 द्यात्समीपं नानुवक्ष्यते ॥ समानं नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥
 ॥ रुद्रिद्यात्समीपं नानुवक्ष्यते ॥ समानं नानुवक्ष्यते ॥ उक्तं नानुवक्ष्यते ॥ सर्वं नानुवक्ष्यते ॥

शस्त्रीयं मातृकमन्त्रं कृत्यात्समीपं नानुवक्ष्यते ॥ स्यर्जना वायुर्मातृनिष्ठा सदा गतिः ॥ यत्तदध्वं न न्यवक्ष्यते न न्यवक्ष्यते ॥
 चयलं कृत्यात्समीपं नानुवक्ष्यते ॥ स्यर्जना वायुर्मातृनिष्ठा सदा गतिः ॥ यत्तदध्वं न न्यवक्ष्यते न न्यवक्ष्यते ॥
 नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥
 नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥
 नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥
 नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥ नानुवक्ष्यते ॥

अवतः १ यो न शान न ता रु न १ य के क र्पि न ल विल धी द य ल्ध न ध्व नो १ ॥ प्र शो
द्या न स्त्रे व न र्थ य न म न ल कू व न १ के ला स १ स्फा न म ल का प र्वि मा न नु प य क ॥ य
कि न न १ कि न्य न ष म् न ह व द न म य १ नि वि नो ष व वि क द १ य द र्ध र्वा द थानि
८५ १ ॥ य द्वा स्त्रि य म हा य द १ र्ध र्वा म क न क क थो ॥ म क न क लु ली ला ध्व व र्व ध्व ति
व थान व १ ॥ धी दि वी द स्त्रि य व क्कु शी म य क न म म्ब र्वा ॥ न र्वा १ न नी क म य ल म न

न म्ब न व ल्म र्व ॥ वि य दि वृ प द म्वा द य र्थ र्वा का र्वा वि हा य र्वा ॥ दि ष म्ब क क र्वा १ का र्वा
म १ १ ध्व र्वा वि न र्व ना १ ॥ य र्वा र्वा य नी य र्वा १ य र्व द दि ल प र्वि मा १ ॥ उ रु वा दि र्वा
वी र्वा दि ध्व लु डि म्ब दि रु व ॥ ०० ॥ धी व दि र्वा य रु प ति न्नि य र्वा व न् १ ॥ म न्ब र्वा क व न
०० १ १ य न य १ य र्वा र्वा र्वा दि र्वा क मा न् ॥ न वि र्वा ध्व र्वा म र्वा र्वा न् १ र्व र्वा न् न वि र्वा
वि र्वा र्वा १ ॥ र्वा र्वा र्वा मि र्वा र्वा दि र्वा म र्वा र्वा र्वा र्वा १ ॥ न र्वा व न १ य र्वा र्वा र्वा म न

१ क म धा ऊ न १ । प ष द न १ सा व र्ण म १ मृ य नी क ष दि ज्ञ ज्ञा १ ॥ क वि (ॐ) १ उ म १
क वि ला पि ङ्ग ला १ नू य मा कु मा र्ण ॥ मा सु क षु शु रु द नी र्वा ङ्ग ना र्वा ङ्ग ना व नी । की वा
व य र्वा ल ष दि ङ्ग दि (ॐ) म (ॐ) वि दि क षि यी ॥ मृ य न न र्वा न न र्वा ल व कु वा ल नु म
ल ल १ । मृ क म धा वा वि वा र्ण न यि न र्वा ला रु क १ ॥ अ वा ष षा ऊ ल ष न रु ठि ला
न वि षा १ मृ रु क १ । घ न डी मृ व मृ दि ज ऊ ल मृ य म थान यी १ ॥ का द मि नी म य मा ला

निष्कमय रुचः प्रियं । सुनिर्गमं किं न भवति निर्धात्रेति नादिवा ॥ अस्याऽपि न
कदा जादित्येव सत्यं कथयता । न हि सा मित्ती विद्युत् अलावपत्नी मृदि ॥
सूक्ष्मं च जनिष्यतामद्य अमिदिदं मदः ॥ ॐ न्यायं भक्तं ननु सूक्ष्मं च सज्ज
नादिनं ॥ दृष्टिं च नैवेद्यामैव साक्षात् वदतां ममा । आनंदात् नान्यसां चैव भीकव
न्मृकत्वं ॥ सुगा ॥ वधायै लज्जु कनकां भवतु नैव हि दृष्टिर्न । मृकं प्रायवधायै

॥ दादायि (ॐ) श्विनी सादि मा वा म् स्वयं श्विनी । वा वा विश्वरूप पृथु सिद्धि मिषी
 श्विनीया ॥ समा धनि रास्य १ प्रोक्त य दारु ड य दाम्नि य १ मृ ग धी र्म मृ धा नि व रु स्मि
 न वा श्रु दा य ती ॥ ॐ ह्य ला रु चि भा द (ॐ) मा न का नि व स नि या १ व रु स्य नि १ १२
 सु ना वा था गी य नि द्वि म (ॐ) गु न १ जी व आ द्वि न सा वा य म् नि श्वि गु नि स्य नि
 रु १ ॥ शु क्रो द ह्य गु न १ का वा उ ध ला रु र्म व क वि १ र्म मा न क १ कू डा की मा ला

दि ता (ॐ) मा म दी रु न १ प्रो दि (ॐ) ला व ४ सो म्या १ सो मा (ॐ) नि धा न श्विनी ॥ न स म्
 ना रु १ स रु न १ र्म दि क था वि य न रु द १ स य व था म नी य वि म रु ला श्वि गु नि स्य
 नि न १ ॥ वा धी ना म् द था ल रु न रु म् व रु धा द य १ रु न रु यो यो मा दि ला द
 मा ला दि वा क ना १ ला रु ना रु रु न रु व रु रु ना रु नि रु क ना १ ला रु दि व रु स्य ला रु
 श्व रु नि द (ॐ) रु न रु स य १ वि क रु ना रु मा रु रु मि हि ना रु न रु व रु न १ रु म नि

सननिमिह विवला न विभाव न ॥ विराव स गुरु य निस्त्रि मा म्यनिर्नद प
 मिशान नर्ह सः सरु श्री ७३ सुय नः स वि का न वि ॥ मा ० न १ पिङ्ग ला द लु ७३
 ली ८७ १ पा नि पा र्वि का १ स न स भा १ न ८ ला १ न १ का ७ य पि र्ज न १ ग व ३ १ ॥ प
 नि व स सु य नि वि नू य स र्थ क म लु ल ॥ कि न ८ ला १ स म य र्वा १ ७ ग न सि य नि
 वृ क्त स १ ॥ न न १ क था म नी वि १ श्री पं स था दी पि मि मि १ ॥ स १ य क न य चि ति

१३

का र ७ वि दू नि दी क य १ ॥ वा वि १ ८ ७ १ चि नू रु की व य का ८ ७ १ धा व आ न य १
 का र्क क था र्क म न्ना र्क क द र्क वि ष र द नि ॥ मि र्म मी र्क र व न न द ल ग रु क्ता
 म नी वि का ॥ का ला दि क्ता १ ७ १ न ला वि स म था १ ७ १ थ य क मि १ ॥ य मि य द ७ ७ १ म श्री वि
 ग दा आ सि थ था द था १ ॥ य आ दि ना १ रु नी क रु की व दि व स वा स नी ॥ य रु क्ता १ रु म र्क
 क ल्य म य १ ७ १ य म सी म यि ॥ य रु क्ता १ रु दि ना र्क रु सा र्थ म आ पि रु य रु १ ॥ य रु क्ता १

गङ्गा मथ्या द्वा प्रि स अ मथ ग वेत्री ॥ निष्प निधी धिनी न नि प्रि या मा क ह द क या ॥
विता वनी न म सि न्या न ड नी या मि नी न मी ॥ न मी आ मा म सी ना ति आ स्ती च न्द्रि क या
नि मा ॥ आ ण मि व र्क मा ना रु य का या नि धि य क ती ॥ ग ण ना र्ण नि षा व क प्र दा र्वा
न ड नी मूर्ख ॥ अ ड ना रु नि धी (धो) दो दो या म प्र रु नी म मी ॥ स प व र्स मि १ प्र मि य त्य १६
अ द (ध्या) य द न र्ज ॥ य द्वा ना य अ द (ध्या) द पो लु मा सी रु य लु मा ॥ क ला सी न मा

नू म नि १५ (रु) ना का नि षा क थ ॥ अ मा व स्या ल मा वा द १५ अ थ न्द्र स ड म श सा द
अ न्द्र १ सि नी वा ली सा न अ न्द्र क ला क दू १॥ उ य ना (अ) व रु ना दू व रु लि न्दी व
पृ ष्टि च ॥ सा य प्र वा य न की द्वा व ग्ना त्या न उ या हि न श ॥ अ क था क्ता य व नी दि व
क न नि षा क थ ॥ अ द द ध नि म वा म् रु का ष्टि विं ष लु ना १ क ला ना म् रु वि ष र्क
ल रु रु म् रु रु द्वा द ण मि या ॥ न रु विं ष द रु ना रु १ य रु रु द ध य अ र च ॥ य

को यत्रोपनीषु कुरुको मासशुभा वृत्तौ धौ धौ माघादि माशौ स्याद कुरु नयन
 निरुतिः॥ अथ न दधनि नूद कददि माः कुरु सवत्सन १। सम मा विनिव काले
 विषुवदिषु वक्ष्यते ॥ पृथ्वी काथो नू मासी योषी माशु य वृत्ता। नामासयो
 यो माघाद्या (ध्वे वम का दधायन ॥ माघ जी अश हा माघ अश हा यति कुरु य १।
 योषी न मसरु स्यादो नयो माघः धरा नू (ला स्या रूप स्या रानु तिक १ स्या वै कुव
 कथं स २

१७

वृत्ता मभू १॥ वै धा स्व मा भवा ना (भा अ कुरु क १ वि सूर्य। अथा उ धा व न कुरु स्या
 नरा १ धा वलिक ध्व स १। सूर्य रु स्यु प्रो व पद राउ राउ य दा १ समा १॥ स्या दा ध्वि न
 वै धाः स्या ध्व य उः पि स्या रु का रिके। वा दू ला ऊ का रिके रु म व न १ धि धि नाः क्रि
 यी ॥ व स न क य प्य सम य १ सून रि णी अ उ अ क १। नि दा य उ धू य व म उ क उ धा ग म
 रु य १॥ क्रिया प्रारु क्रिया रु निव य म्नि ध धान न क्रिया। अ उ मी ज न व १ यं सि

क ३

[illegible]

कर्ममानसंविताका (ममनसा नश्यच्च संख्याविज्ञानम् ॥ अथ लानरुक्कडो
विविक्तिसादुर्गंधाय ॥ सन्दरुद्रात्मजीवाधसमीनित्यनिष्ठयामिथादृष्टिना
स्तिकतायावादाडारुचिकर्तुः। समीपिज्ञानवादात्कीर्तयामिथामनिकुमंश ॥ सं
विदायूः प्रमिष्टान्नियमाधवसंश्रुता ॥ अङ्गीकारायुपमं प्रमिष्टवसमाध
य ॥ भादेवीहोनमन्यवविष्टान्निलिप्तमृथा ॥ मृक्तिः केवल्यनिर्वाहधथा

नि (ध) य सा मर्ग। भा काः य व (र्ज) ध रू न म वि द्याः द म निः श्रु र्था ॥ पूर्व म धा व न्य
 न स स्य धा विष या म्मी। (म) य वा ण्द्रि या धा धरु वी क मि धयी न्द्रि र्था ॥ क म्मी
 न्द्रि य नु पा या दि म ना न गु धी नी न्द्रि र्था। रु व न म् क मा थाः श्री म व्वा ल व ल क दू ॥ १४
 नि कोः सु ध्य न साः र्थ सि न द स्य ण्द्रि र्था। वि म द्वा क्ति य वि म ला न्द्रि र्था न म म
 रु न ॥ आ मा द ४ साः नि नि र्वा नी वा य लिङ्ग त्वा म्भु ल न्द्रि र्था स मा क र्वा रु नि र्वा नी स न्द्रि

शु वा ना मि नी ली प्रा नि नि धी ध (म)। ज क्ती रु रु व नी रु वा नी र्वा ध्व ती स न स नी ॥
 आ ल न उ कि ल्ति वि र्ग रु मि न म्भ व न म्भ च ॥ अ य र्जु (ध) य ध द स्या न्द्रि र्था ध द यु
 वा च क ॥ नि धू व न्द्रि र्था वा क्ति र्था वा क्ति र्था। ध्निः श्रु र्था व द्वा म्भ य म्भ
 यी ध म्भ म्भु न्द्रि र्था ध्निः श्रु र्था व द्वा म्भ य म्भु यी। नि धू र्था ध्निः श्रु र्था
 व द्वा म्भु म्भु न्द्रि र्था ध्निः श्रु र्था व द्वा म्भ य म्भु यी। नि धू र्था ध्निः श्रु र्था

दिक्कीदछनीमिस्सुर्कविद्यार्थः॥ मुथाः॥ आख्यायिकापलवार्थः॥ पूनाएयश्चलक
नी॥ पुर्ववकल्यनाकथाप्रवहिकाप्रहलिका॥ स्मृतिस्सुधर्मसंहितासमाहमिस्सुय
वहः॥ समस्याहुसमासा॥ किम्वदकीजनधुमिः॥ सज्जधुमिसर्जध्वर्ध॥ मन्त्रक २०
नामिवावक्षन्नुचनिर्गवपूनाएयश्चलकनी॥ वाह्यप्रवृत्तीवृत्ताक्तउदकः॥ स्या
दथाकयः॥ आख्याकः॥ अरिभानः॥ नामः॥ (वयः॥ नामचा॥ हृमिनाकावत्तान्नामैर्द

निर्वहृरिः॥ रुका॥ विवादावतलानः॥ स्यादूपन्यासमुवाहृर्द॥ उवाद्यानउदका
नः॥ यनर्गयथः॥ यमान्॥ पुः॥ (ध्मः॥ नूथागः॥ यः॥ कावपुमिवाका॥ रुमसम॥ मिथ
रिथा॥ (वः॥ स्यानसथमिथारिगन्तर्न॥ अरिगायः॥ पुः॥ (ध्मः॥ दमुः॥ दः॥ स्यादनुवाग
उः॥ यः॥ कीरिः॥ समस्तवस्तुवः॥ कीर्तनः॥ मिः॥ रुमिः॥ अमुठिर्ददिसिन्नुकम्
वैद्युन्नुथापत्ता॥ काक्ः॥ मिथारिकात्रायः॥ (ध्मः॥ कीरिथादिरिद्धनः॥ अतः॥ रु

यनि द्वाय जनी वा दाय वा द व न् । उप का (६) इ मु श्रा व क्त्वा नि न्द व न् (६) ॥ या न्
 श्र म कि वा द १ श्रा इ त्म न् त्व य को व नी १ । य १ स नि न्द उ वा ल म् रु रु द्र श्या ल्य वि रु ष
 र्ज ॥ न न् त्वा का न ली य १ श्रा दा का (६) मे धू न् य नि । श्रा दा रा ष द मा ला य १ य ला था न
 र्थ क म् व १ ॥ श्र नू ला था म् दू का षा वि ला य १ य नि द व न् । वि प्र ला था वि त्रा (६) कि १ स
 ला था रा ष र्ज मि थ १ ॥ सू य ला य १ सू व च न म य ला य मु नि द्र व १ स न्द श वा षा वि र्क

२१

श्रा दा (६) द मु वि षू रु न् ॥ उ व नी वा द क ल्या ली श्रा क ल्या रु द्र श्रा त्मिका । श्र य र्थ म् धू न्
 सा र्त्त स ह न् रु द र्थ र्म ॥ नि दू न म् य नू र्ष श्रा र्थ त्व श्ली र्त्त रु न् र्ग पि थ । स य र्थ र्म कू र्त्त
 क्रि ष्ट प न सा य न वा रु न् ॥ लू फ व रु य द् व रु न् नि व रु त्व नि मा दि न् । श्र मु क र्म स नि
 द्वा व म् व द्वा द न र्थ क ॥ श्र न क न म वा र्थ श्रा दा रु न् रु म् व र्थ क । श्र ध मि ष्ट म वि श्र
 र्त्त वि न र्थ ल न् रु म् व १ ॥ स र्त्त र्थ म् र्म स म् य र्म नि वि षू रु द्वा नि । श्र द्वा नि ना द नि

श्री॥ आनकः पठहाः श्री सा. को. ला. वी. ला. दिवा. दर्न. वी. ला. द. छ. १ प्र. वा. ल. १ सा. ल. करु
 शु. पु. भ. व. क. १॥ काल. म. क. शु. का. था. १ सा. उ. य. ना. हा. नि. व. न्ध. नी. वा. य. प्र. रु. दा. ठ. म. नू. म.
 दु. ठि. लि. म. म. र्ज. वा. १॥ म. द. ल. १ प्र. ल. वा. १ न्ध. र. न. रु. की. ल. सि. का. श. म. वि. ल. मि. र्द. न.
 म. य. क. ल. भा. धा. ध. न. क. मा. नू. ॥ ग. ल. १ काल. वि. या. मा. न. ल. य. १ सा. म. म. थ. मि. र्ज. या. ग. ल.
 व. न. ठ. न. ^१ ~~का. ल. वा. ल. न. य. रु. न. रु. न.~~ ॥ मो. र्ज. मि. र्द. न. ल. य. धी. र. वा. ध. न्ना. ध. मि. र्द. न. य. १ उ. क.
 ला. स. नो. द.

[illegible]

कान नीवीं च ठी नखी स्य नि। अङ्ग लभाङ्ग विक्षया वाङ्ग कारुन धी सभा॥ निवृत्त लः
 द्वि सत्ता स्याद्वि विद्याङ्गिक सात्त्विक। अङ्ग नवीन कनू लङ्ग न लस्य रुयान का॥ वीरुत्त
 प्रोद च नसा १४८ अङ्ग न १४९ विनू क लङ्ग उ ल्हा रुव द्र ना वी नू का नू ल्ध क नू ल्ध ल्हा॥ कर्प २४
 दया य नू क म्या य नू का (भा य (भा रु स १। लभा लस्य अ वीरुत्त विरु दन्ति विद न्दर्य
 ॥ वि स्याङ्ग न मा ध्व यो र्गु म य ध रु न वी। य नू ल म्मी य ल म्मी र्मा धान म्मी मरुयान

कं॥ कर्प कर्न प्रमि कर्प नोर्द ल य म मा विष्। च रु द्ध द न ग्रा सो री नि की १ सा ध स
 म्प र्प॥ वि का भा मान सा ल वा नू ल वा ल व वा व क १ ग वा र्गि मा भा र्गु का भा मा
 ना ध्व रु स मू न नि १॥ अ ना द न १ प वि रु व १ प नि रु व स्ति न स्ति या। नी रा १ व मान न
 व ह्य अ व रु ल म स रु ल॥ म न्दा र्गु दी रु पा वी ज ल ज्ञा सा य रु पा न्य न १ कान्ति रि
 मि का र्गि र्मा रु प न स विष य स्य हा॥ अ कान्ति नी या स्य या रु पा भा भा यु ले ष्य पि

॥ वं वं विना (अ) वि दध्या म न्य (अ) को हु हु क क्रिया । प ध्व ला या नू ना प ध्व वि य
मी सा न वं य पि ॥ का य को (अ) म र्वा य पु नि या नू हु कु (अ) क्रिया । पु यो हु च नि न
शी ल मू ना द शि रु वि रु म श ॥ पु मा ना छि य मा ला द्धु म स्त ला थ दा रु द । वं क र्क २७
का रु रु ला रु व्वा झ लि या म ना न थ ॥ का भा शि ला य रु र्ध्व स म ला नू ला ल सा
द थ ॥ उ पा वि ना ध म चि ना पू स्या वि मा न सी य था । श्या चि का म्म नि वा ध्वा न मू र्क

(०) क लिक स म ॥ उ ला रु ध्वा व सा य १ स्या स वी र्ध म नि श कि ला क्क क य भा श्मी या उ
द म्मा य व य ध्वा द क र्क व ॥ क रु नि नि रु नि १ ध्वा र्धु मा दा न व धा न मा को रु रु ल क
हु क रु क रु क रु क रु रु ल ॥ श्री ल म्मि ला स वि द्वा क वि रु मा ल लि न क था रु ला ली
ले य मी दा वा १ क्रिया १ ४४ झो न रु व जा १ उ व क लि य त्री ला सा १ की ठ ली ला च न म्म र
॥ या ओ प द (अ) ल ड्वा रु की ठा र्ध ला च क र्क न । य म्मा नि दा य १ ध्वा द १ स्या ल्थ ल थान

वृत्तवृत्ता॥ अवरुत्ताकात्रमुक्तिः समोसमधसमुमो। स्यादाकूत्रिनकंतासः
 शात्यासः समनास्मिन् ॥ मथमः स्यादिरुसिर्नामा (अ) भामरुवर्त्ता। कन्तिर्न
 नदिर्नकुर्वृत्तमुक्तिषूहृत्तुर्न ॥ विपुलं विस्मयादाविहृत्तुस्वतर्नसम २५
 । स्यान्निदाधयनं स्यापः स्यपः सधधं वृत्तयि ॥ नन्दिप्रमीलाकूटिर्कूटिर्कू
 क्तिः श्रियः। अदृष्टिः स्यादशी मथः श्रिस्तिद्विपुहृत्तुत्तिम ॥ सनृपः स्यरावध

निसर्गार्थवयधः। कम्पाश्चकलउद्धर्मासहउद्धवउत्तवः ॥ २३३ ॥
 स्रग्जवेम्नः। अ (अ) रुवनपागलवलि सधनशाकल। नागलाकारधकूटनविवर्न
 धुषिन्नस्वित् ॥ च्छिदन्निर्धुधनं नाकं नर्थं स्रग्जवयाधुषिः। गलाश्चठे रुविस
 कृत्तन (अ) धुषिर्न विषू ॥ अन्धकाभाश्रुयां धाकूत्तुमिप्रकिमिन्नकमः। अन्ध
 गहः अन्धगमसंकी (अ) वरुमैकमः ॥ विष्वक्कनमसनागः। कादुवयाकूदीध्वनः।

(ग) श्रीः नन्वा वासुकि मुसर्वनाडाथ (बानस ॥ निलिच्छु ४ श्यादज गय शयु वीरस
 ०० यशो। म्रन गद्राज लया लः सभा नाजिल डू कुशो ॥ मालू धना माकु लाहिलि मुका
 मूका क कूक ४ सर्व ४ एदा कू डू ज (भा कु डू डू ४ रि डू डू डू म ४ ॥ श्री विभा विव वनः २०
 श्री जी वा ठ ४ स नी सय ४ कू ली म्रु च वा सु डू ४ ध वा ४ का का द न ४ रु ली ॥ द वी क वा
 दी र्व ए ४ द न्य ४ को विल ग य ४ ॥ उ न ग ४ प न्न (भा रा गी डि म्रु ग ४ प व ना ग न ४ ॥ वि

[illegible]

श्रीसिन्धुः स्यादलक्ष्मीमुनिर्जनिः। विष्टिनाहः कान्तः। दुःखानना नीवुवदना
 । पीशवाभावात्। दः स्वममानस्यस्यसूनिर्जः॥ स्यात्कष्टं कुरुमासीत्। क्रिधेवाकः
 द्रष्टासिन्धुः। समुद्रोऽस्मिन्कृपायः। यानाकानः। सविद्यमिः॥ उदन्तान्दविष्टिः।
 सनखान्साधनाः। वः। ननाकनाजलनिधिर्यादः। यमिनयाम्यनिः। नस्यपुनः।
 १। कीनाधनवः। दः। आयः। आयः। श्रीरुम्निवावविस्तिलकमलजलः॥

पयः कीलालममृर्जीवनं कुवनममर्न। कवन्ममृदकम्याथः पूष्कनं सर्वभाम
रुं॥ मृत्ताः मृत्ताः यानीयनीयकीयामृगमर्न। मद्यप्यर्थयननसन्निवृद्धा
मममर्न॥ रुद्रमर्न मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः
मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः
मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः मृत्ताः

॥ या वा वा न य वा वा ची नी न या वा गुं द द न न ॥ दी पा श्रु त्रि या म न्न नी र्प य द न्न चो वि त
 रु ट ॥ भा या त्रि न न न स्य लि न (ने क र्म शि क ता म र्थ ॥ नि ष द न्न म्भु ज म्मा ल १ र्थ को १
 श्री ग्ग द क द भी ॥ श ली क्वा सा १ य नी वा ला १ कू य का म्भु वि दा न का था ॥ ना र्थ त्रि लि ङ्ग नी २८
 ना र्थ श्रु त्रि या नी रु न लि रु त्रि १ उ डू य न्न पु व १ का ल १ आ ना र्थ म्भु स न र्थ स न ॥ आ
 न न रु न य र्थ सा द्वा नी का वा म्भु वा रि नी ॥ सा या त्रि क १ था न व लि क्क क्कु ध न म्भु ना

विक १ ॥ नि जाम का १ पा न वा ला १ कू य का म्भु ल व क्क १ नी का द ल १ कू य नी र्था द वि गुं
 क नि वा न क १ ॥ श्रु त्रि १ का र्थ क्क द ल १ स क पा व न्न भ व नी ॥ आ न या व न्न था ना र्थ वि रु
 व सा म्भु दि र्थ त्रि ष ॥ सा म्भु डि का म न्न श्री श्रु ति जा ना धो नी स म्भु डि का ॥ त्रि षा न्ना म्भु स न्ना
 १ रु १ क लू था र्थ न रु श्र वि ल ॥ नि र्म म र्थी न रु म्भु न म्भु लान क्क दि य र्थ ॥ म्भु ना म न्न
 म न्न ल स्य र्थ रु व रु दा स भी व नी ॥ आ ना य १ र्थ सि जाल था रु न रु र्थ म्भु वि रु क ॥ म्भु ना

भानी कवलीया द्विर्ग मल्लवधन ॥ पृथुभा मासवाम ल्यामी नावे शावि (ल २६६)
 ३१ विमान ११ कली वाध ११ क ११ कला क ११ सरुमुद ११ या ११ न ३ लूणी
 शु ११ स ११ नलमी नविलिविम ११ प्राप्ती सु सरुनी दया ११ क ११ मल्ल स ११ दान ११
 मा भान मल्ल म ११ प्राप्ती मा म ११ न ११ ला ११ जीव ११ कल मि ११ मि मि द्वि ला
 दय ११ ध ११ दाहि ११ कल ११ क ११ व ११ न ११ दा ११ नि ११ मा ११ दा ११ क ११ म ११ क ११ दा ११ दय ११ दय ११

लीलः कर्क ठकः कर्म कम ० कच्छो ॥ अरु इव हा नान कुरु कृमी ना इधम हीलना ॥ ग
लुपदः किः कुरु लुका निहा का (भाषि काम म ॥ न क पा हु ऊ लो का या म्पि यरु निऊ लो
क म ॥ म का रू ठः म्पि यरु किः ॥ रिवः ॥ स्या त्क म्पु न म्पि यो ॥ दू उ रिवः ॥ रिव न रयाः
॥ म्पु का ऊ ल म्पु का यः ॥ रु कम लु क व र्वा रू सा ल न पु व द दू या ॥ जिलि ग लु प दी रु की
व र्वा रू की कम ॥ प लिले थ म लु न स्य पि या ॥ उ ह्नी दू नो मा दी रू का पि का ॥ ल ला ण या ऊ मा थ

[illegible][illegible]

सिधुसमम॥दुधा॥युजनीययस॥पदवालिषूहकनो॥यविकार्यसवयाकरु
 वजाविकसावती॥शोर्गविन्दुकजानरुल्लर्कवकसन्धर्क॥स्थादुत्यलकवलयः
 मथनीलान्जन्मव॥ॐन्दीवयक्षनीलशिमिशिकुमुदकेनव॥धालुकमर्थाक ३२
 न॥स्थाद्रानियकुहुकृमिका॥जलनीलीहु॥षेवाली॥षेवला॥धकमुदकी॥कुमुदिः
 यान्तलिन्यानुविमिनीपद्मिनीमूखा॥धार्पसिपद्मनलिनमवविन्दमाहात्यलीस

पं३

रुप्रजकुंकरमर्ल्लनयकुंकर॥धार्प॥पंकजूरुकाभवर्सावर्सासवसिपुदीवि
 सुवसुननाडीवपूकवा॥भापूलातिव॥पूचनीकसिताकाजमधनकसवापूदी॥न
 कोत्यलीकोकनर्दनालानलमस्त्रिया॥मल्ललमिसमकादिकदमपलुमस्त्रिया
 ।कनलाठ॥गिरुकरुंकिऊल्क॥क॥प्रा॥स्त्रिया॥सर्वरुकिनवदम्वीजकाषा
 ववाठक॥उकीस॥धार्पसिपद्मनलिनमवविन्दमाहात्यलीस

वाक् सङ्गर्भं ॥ ५० ॥ वाक् सङ्गर्भं ॥ ५० ॥ वाक् सङ्गर्भं ॥ ५० ॥
 दिक् सङ्गर्भं ॥ ५१ ॥ वाक् सङ्गर्भं ॥ ५१ ॥ वाक् सङ्गर्भं ॥ ५१ ॥
 दिक् सङ्गर्भं ॥ ५२ ॥ वाक् सङ्गर्भं ॥ ५२ ॥ वाक् सङ्गर्भं ॥ ५२ ॥
 दिक् सङ्गर्भं ॥ ५३ ॥ वाक् सङ्गर्भं ॥ ५३ ॥ वाक् सङ्गर्भं ॥ ५३ ॥
 दिक् सङ्गर्भं ॥ ५४ ॥ वाक् सङ्गर्भं ॥ ५४ ॥ वाक् सङ्गर्भं ॥ ५४ ॥
 दिक् सङ्गर्भं ॥ ५५ ॥ वाक् सङ्गर्भं ॥ ५५ ॥ वाक् सङ्गर्भं ॥ ५५ ॥
 दिक् सङ्गर्भं ॥ ५६ ॥ वाक् सङ्गर्भं ॥ ५६ ॥ वाक् सङ्गर्भं ॥ ५६ ॥
 दिक् सङ्गर्भं ॥ ५७ ॥ वाक् सङ्गर्भं ॥ ५७ ॥ वाक् सङ्गर्भं ॥ ५७ ॥
 दिक् सङ्गर्भं ॥ ५८ ॥ वाक् सङ्गर्भं ॥ ५८ ॥ वाक् सङ्गर्भं ॥ ५८ ॥
 दिक् सङ्गर्भं ॥ ५९ ॥ वाक् सङ्गर्भं ॥ ५९ ॥ वाक् सङ्गर्भं ॥ ५९ ॥

रुमल्लामल्लामल्लिका। उषमानुषमोदावप्यन्यलिङ्गोऽसुल्लसुलीसमानोमवधना
 नोद्विखिलाऽपुनरुनसम॥ विष्वक्पाऊगमीलाकऽपिष्टयंनुवर्नऊगम्। लाकाऽयंरा
 नममयसमावसाश्रुथान(४॥ दणऽपाब्दकिलऽपासाउदीराऽपश्चिमाकनऽपय
 कासुचुदणऽस्यानमदणश्रुमयम॥ आशावरुऽप्यक्षरुमिर्मयान्विन्धदिमागथाऽ
 । द्रष्टुगवङ्कलिङ्गयंवालादङ्कननिवासस्थानस्या॥ नीवृङ्कनयदादणविषयोहयवरु
 न॥ विष्वा(४॥ स्थानेठप्राथनश्रुमद्वल्लंयजि। कूमृद्वान्कूमृदयाथवेनसान्वद्व

नमः॥ श्री दलः॥ दल विनः स ज माल नु य कि लः॥ जल प्राय म नू र्य स्या स्यु न्नि क कृ रु अ
 वि ४॥ श्री ग क ना ग क वि लः॥ ग क नः॥ ग क ना व नि । द ग न वा दि मा र्थ व म न या श मि
 क ना व नि॥ द ग न य म व रु म स म्य न वी रि पा लि नः॥ स्या न दी मा रु का द व मा रु क श्व य
 धा क र्म॥ स्या रु द ग ना ज ना न स्या रु का न्य नु ना ज वा न॥ ग र्ध (ग स्या न क न क रु (गि यी
 न रु न पृ र्ध क॥ प र्थ क रु ४ व नि स न १ स रु ना लो मि र्थि य म्मा न॥ वा म ल न श्व ना कृ श्वः

वत्सी कं यून्यं सूकं ॥ अयनं वत्सीमाश्रय नूनः यदवी सृनिः सवतिः यद्वनिः यथा
वर्तु श्यक यदीति वा ॥ अगिन नूनः सृज न्नाश सत्यथश्चिन्तः धनिः अक्षा दूत्रः अविषयः कद
अकायथः समाः ॥ अज नूनः अथ नु लो गृह्णा ठकच दुष्यः (वा) यान्नर्न दूत्रश्च न्याश्च कान्तमिव
त्मा दुर्गमं ॥ वक्त्रमिः श्रीकाशयर्न नत्वः किं चकचुं न री यन्ता यथः स सज न्तक सृज श्याप
निष्कर्षः ॥ १४ ॥ रुमिवर्गः ॥ ॥ यूः श्रीययीनमश्री वापरुर्न यूठरुदनी । आनीयन्निगमाः

लयन्तु यन्मालनगत्रात्पूर्व ॥ ननु खाननन वंशवस्थाननसमाश्रयश्रयत्तन्मनिमद्यार्थ
 म्वियतिः पञ्चवीथिका ॥ तथा प्रभाती विनिखाया चथा वयमश्रिया ॥ याकात्रावत्र ॥ १॥ ल ॥
 यावीनया नया वृत्तिः ॥ हिलिः ॥ श्रीकृष्णमहर्कयदनन्तस्कीकस ॥ गृह (बलादवसिर्न
 वक्ष्यस्यनिकेनन ॥ निष्पन्नवस्त्रासदनं रुवनामानमदिन ॥ गृह ॥ यंसिचरुष्मवनि
 कायनिलयालयाशा वासः ॥ कृष्णदथा ॥ १॥ ल ॥ स्रुस्रुमनं लिदी ॥ चतुः ॥ १॥ ल ॥ मनीनाः

कुप्यत्तु ॥ लोठआश्रिया ॥ ये यमौयननं रुत्वा जिभा लोठसन्दूना ॥ अत्र शनीनिलि
 ॥ लोत्तयापानीयभालिका ॥ म ० ॥ कादिनिस्तथा ॥ गृह ॥ रुमदिवा गृही ॥ गृह ॥ मर्व
 वास गृह मर्विषं रुमिका गृही ॥ वा नायनं गवाकः ॥ १॥ ल ॥ लोत्तया ॥ रुमदिवा गृही ॥ गृह ॥ मर्व
 धनिना वासः ॥ १॥ ल ॥ लोत्तया ॥ रुमिका गृही ॥ वा नायनं गवाकः ॥ १॥ ल ॥ लोत्तया ॥ रुमदिवा गृही ॥ गृह ॥ मर्व
 कः ॥ सर्वना रुमिका गृही ॥ वा नायनं गवाकः ॥ १॥ ल ॥ लोत्तया ॥ रुमिका गृही ॥ वा नायनं गवाकः ॥ १॥ ल ॥ लोत्तया ॥ रुमदिवा गृही ॥ गृह ॥ मर्व
 सन्तनदिनल

नमः रजमं नमः पूजं श्या देवनाथन ॥ ३३ ॥ नमः वनाथन श्या देव ॥ श्रीमं मं श्रिया ।
 पद्याल पद्यमालिनी वलि दानपु काष्टका ॥ गृहावयवनाथ दहली ॥ श्रीमं मं श्रिया ।
 नमः ॥ श्रवणादा नृलिनि लीना सा दानु यविस्ति ॥ ३४ ॥ पद्य नमं नमः श्या देव दानु नमः
 पद्यकी । वली कनी वय च लपान् ॥ ३५ ॥ पद्य दहली ॥ (मयान श्री कृ व ठ री का द न व
 क दानु ली । कथा न पालि का र्थं विठ्ठलं नयं सक ॥ श्री कृ दानु नमः श्या देव

यदि शुभे दिका । नमः ॥ श्री वलि दानु नमः दानु नमः (मयान ॥ कृ व दानु नमः श्रिया नमः
 लीन पद्यि म । कथा च मय नमः लीन पद्यि मय नमः ॥ श्री वलि दानु नमः श्या देव दानु नमः
 (मयान श्रिया दानु नमः ॥ श्री वलि दानु नमः श्या देव दानु नमः ॥ श्री वलि दानु नमः
 नमः श्रिया दानु नमः ॥ श्री वलि दानु नमः श्या देव दानु नमः ॥ श्री वलि दानु नमः
 लीन पद्यि म । कथा च मय नमः लीन पद्यि मय नमः ॥ श्री वलि दानु नमः श्या देव दानु नमः

यत्र वर्जः॥ ॥ मही (प्र) निखनि स्मृत् रुद्र ह्यर्थ भव पर्वतः॥ अदि (म) वृत्ति निमा वा यत्न (म)
ल निभा चया॥ ला काला कश्च क वा ठ श्रि कूट श्रि क कूत्तमो॥ नृ नृ नृ च न म स्मृत् रुद्र द
यः पूर्व यव कः॥ हिमवान्न म यो विष्णु मात्य वा न्या त्रिधा वृत्तः॥ मन्व मा द न म न्य यव
म कूट य द थान म॥ या या ल य नृ व अ वा य ला श्मान शनि ला द म नृ कूटः॥ श्री निख वर्जः ३१
म स्र या नृ नृ व ठा रु रु॥ क ठ कौः श्री नि न म्माः ५१ सु १ य रु १ सा न व म्मि थो॥ उ स १ य

अव लम्बा त्रि य वा रु निर्ज वा म न॥ द न्री रु क नृ वा वा श्री द व र्वा म वि ल रु ला म रु
व रु रु (म) ला म्मृ य माः म्मृ ला य ला मि न॥ ख नि श्रि य मा क नृ १ र्वा ला दा १ य र्वा नृ प व र्ज
१ उ य र्वा का ड वा स न्ना रु मि नृ द्म म वि र्वा मा॥ क रु म्म नृ शनि ला द य रु (म) वि क रु वि (म)
म रु शनि रु श्री कू श्री वा क्री व ल मा दि पि रि मा द न॥ ॥ (म) ल वर्जः॥ ॥ अ ठ य नृ व
मि पि र्ज न रु र्ज का न न म्म र्ज म लो नृ व म नृ व नी रु ला वा मा म्मृ नि कू टा॥ अ वा म १ र्वा

दूयवर्नं कृत्स्नमस्मभं वयम् । अमात्यमलिका (अक्षयवर्नं वृक्षवर्णिका ॥ प्रमाना की
 उडधानं नारु १ साधनं लं वनं । स्यादं नदं वप्रमदवनमन्त १ प्रभाविर्न ॥ वीथालि
 नावलि १ यकि १ (गला लखा नुना जय १ वन्यावनसमृद्धं स्यादं नदं १ रिनवादिदि २६
 ॥ वृक्षमहीनरु १ असीविनयोपादयस्मन् १ अनाकद १ क ० सोल १ यलाभीदुदमान
 मा १ ॥ वानस्य १ रुले १ पूषाकेन पूषादनस्यनि १ अवकि १ रुले या काना स्यादव १

य १ रुले ग्रहि १ आव १ रुला इवकसी चरुलवान् रुलिन १ रुली । प्ररुली रुले
 रीरुले याकावविकचरु १ रुले (अभं विकसिनं स्यनव न्यादयकि १ अ
 लवाना येव १ अकृदं सभासागिरु १ दूय १ ॥ अयकाकं सुमवृत्ती वली रुवमनिल
 मालनायनानिनीवीनहुमि न्यलमर्णं सपि ॥ नभायात्रादु उकायउ सभा (अचुयध
 स १ अफुपकाल १ सन्ये १ स्यान्मला क्वावाव (अरुना १ ॥ समभासालनं सन्ये १ अभासा

॥ लं लि रु कट ॥ गं वा नि रु व भा ह ॥ स्थान् मू ला वा ध न न ल गा ॥ लिं भा र्थं लि र्व न वा
 ना मू ल म्बु (॥ १ ॥ चि ना म क १ ॥ सा भा म जा प्र भा ल क जी व ल म्बु ल म म्बु र्था ॥ का रु द्या
 वि न्धे न ल व ॥ २ ॥ ध म व १ ॥ स मि मि र्था ॥ नि कू र १ ॥ का ठ न म्ना ना व ल्हे वि म्भु वि १ ॥ मि र्था
 ॥ य रु म्बु ला गं दू द न न्द ल म्बु कू द १ ॥ प्मा नू प ल वा १ ॥ म्भी कि स ल य मि म्भा वि ठ
 था १ ॥ मि र्था ॥ वृ द्वा दी ना मू लं स र्थ म्बु ल म्बु स व व न्धे न ॥ म्भु रू लं ग ला दू १ ॥ था दू क वा

३०

३०

न म्भु रू वि ठ ॥ का न का जाल कं की व क वि का का न क १ ॥ प्मा नू ॥ था दू ल क म्बु व क १ ॥ कू
 द्वा ला म्बु ला १ ॥ मि र्था ॥ मि र्था १ ॥ म्भु न स १ ॥ प्थ म्बु रू लं कू रू म्भु स म्भु ॥ म क न न्द १ ॥ प्थ म्भु
 स १ ॥ प्थ म्भु १ ॥ म्भु न न क १ ॥ धि ली न य स व स र्व रू वि न का द य १ ॥ मि र्था ॥ म्भु रू लं व ल व
 प्रा क्ते य (॥ १ ॥ वे रु द म्भु ल ॥ वा र्द न रु रू लं ज म्भा ज म्भु १ ॥ म्भी रू व ज म्भु न ॥ प्थ म्भु न य
 रु न य १ ॥ स र्थ मि म्भा वी रु य १ ॥ रु ल ॥ वि द्या यो द्या म्भु लं १ ॥ पि प्थ म्भु लं १ ॥ पि प्थ म्भु लं १ ॥

[illegible]

२५

वगुलः १२३४५६७८९१०१११२१३१४१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४२५२६२७२८२९३०३१३२३३३४३५३६३७३८३९४०४१४२४३४४४५४६४७४८४९५०५१५२५३५४५५५६५७५८५९६०६१६२६३६४६५६६६७६८६९७०७१७२७३७४७५७६७७७८७९८०८१८२८३८४८५८६८७८८८९९०९१९२९३९४९५९६९७९८९९१००१०१०२१०३१०४१०५१०६१०७१०८१०९११०१११११२११३११४११५११६११७११८११९१२०१२१२२१२३१२४१२५१२६१२७१२८१२९१३०१३१३२१३३१३४१३५१३६१३७१३८१३९१४०१४१४२१४३१४४१४५१४६१४७१४८१४९१५०१५१५२१५३१५४१५५१५६१५७१५८१५९१६०१६१६२१६३१६४१६५१६६१६७१६८१६९१७०१७१७२१७३१७४१७५१७६१७७१७८१७९१८०१८१८२१८३१८४१८५१८६१८७१८८१८९१९०१९१९२१९३१९४१९५१९६१९७१९८१९९२००२०१२०२२०३२०४२०५२०६२०७२०८२०९२१०२११२१२२२१२३२१२४२१२५२१२६२१२७२१२८२१२९२१३०२१३१३२२१३३२१३४२१३५२१३६२१३७२१३८२१३९२१४०२१४१२१४२२१४३२१४४२१४५२१४६२१४७२१४८२१४९२१५०२१५१२१५२२१५३२१५४२१५५२१५६२१५७२१५८२१५९२१६०२१६१२१६२२१६३२१६४२१६५२१६६२१६७२१६८२१६९२१७०२१७१२१७२२१७३२१७४२१७५२१७६२१७७२१७८२१७९२१८०२१८१२१८२२१८३२१८४२१८५२१८६२१८७२१८८२१८९२१९०२१९१२१९२२१९३२१९४२१९५२१९६२१९७२१९८२१९९२२००२२०१२२०२२२०३२२०४२२०५२२०६२२०७२२०८२२०९२२१०२२११२२१२२२१२३२२१२४२२१२५२२१२६२२१२७२२१२८२२१२९२२१३०२२१३१२१३२२१३३२२१३४२२१३५२२१३६२२१३७२२१३८२२१३९२२१४०२२१४१२२१४२२२१४३२२१४४२२१४५२२१४६२२१४७२२१४८२२१४९२२१५०२२१५१२२१५२२२१५३२२१५४२२१५५२२१५६२२१५७२२१५८२२१५९२२१६०२२१६१२२१६२२२१६३२२१६४२२१६५२२१६६२२१६७२२१६८२२१६९२२१७०२२१७१२२१७२२२१७३२२१७४२२१७५२२१७६२२१७७२२१७८२२१७९२२१८०२२१८१२२१८२२२१८३२२१८४२२१८५२२१८६२२१८७२२१८८२२१८९२२१९०२२१९१२२१९२२२१९३२२१९४२२१९५२२१९६२२१९७२२१९८२२१९९२२२००२२२०१२२२०२२२२०३२२२०४२२२०५२२२०६२२२०७२२२०८२२२०९२२२१०२२२११२२२१२२२२१२३२२२१२४२२२१२५२२२१२६२२२१२७२२२१२८२२२१२९२२२१३०२२२१३१२२१३२२२१३३२२२१३४२२२१३५२२२१३६२२२१३७२२२१३८२२२१३९२२२१४०२२२१४१२२२१४२२२२१४३२२२१४४२२२१४५२२२१४६२२२१४७२२२१४८२२२१४९२२२१५०२२२१५१२२२१५२२२२१५३२२२१५४२२२१५५२२२१५६२२२१५७२२२१५८२२२१५९२२२१६०२२२१६१२२२१६२२२२१६३२२२१६४२२२१६५२२२१६६२२२१६७२२२१६८२२२१६९२२२१७०२२२१७१२२२१७२२२२१७३२२२१७४२२२१७५२२२१७६२२२१७७२२२१७८२२२१७९२२२१८०२२२१८१२२२१८२२२२१८३२२२१८४२२२१८५२२२१८६२२२१८७२२२१८८२२२१८९२२२१९०२२२१९१२२२१९२२२२१९३२२२१९४२२२१९५२२२१९६२२२१९७२२२१९८२२२१९९२२२२००२२२२०१२२२२०२२२२२०३२२२२०४२२२२०५२२२२०६२२२२०७२२२२०८२२२२०९२२२२१०२२२२११२२२२१२२२२१२३२२२२१२४२२२२१२५२२२२१२६२२२२१२७२२२२१२८२२२२१२९२२२२१३०२२२२१३१२२२१३२२२२१३३२२२२१३४२२२२१३५२२२२१३६२२२२१३७२२२२१३८२२२२१३९२२२२१४०२२२२१४१२२२२१४२२२२२१४३२२२२१४४२२२२१४५२२२२१४६२२२२१४७२२२२१४८

कालस्कन्धस्वनिनिशानक॥ काकन्युः कलकः काकपीलकः काकनिन्दकः॥ (माली
 रुपाहली यन्त्रापाठलिमाकमस्कको॥ निलकः कनकः श्रीमान् समो विचलमा
 वृको॥ श्रीयल्लिकाकमदि काकमीके उयकहू लो॥ कनकः पट्टिकायाः शान्यही
 लाकाप्रसादनः॥ नूदमु यमः कनकावम (आवम दानुव॥ हल श्रीनी पप्रियक
 कदम्बमुदालिप्रिय॥ वीन वृक्षा नृकाः मिमूरी नृला न की प्रिय॥ नर्दरा (क) कद

४२

नालकपीननसूयावकाः शृङ्ग स्वनिनि जीवि श्रुमिका (थापिन नालक॥ सङ्ग
 कासनव नृक यूप्रियक जीवकाः॥ नाल रुसङ्ग काथा स्वकलुकाः शान्यसम्वनः
 ॥ नदी सङ्गो वीन नम्र निन्दकः ककशाङ्ग नः॥ नाजादन रुला थङ्ग कीनिकायामथ
 दयाः॥ नृङ्ग दीनाय सन नृङ्ग कीव मिमूद लयी॥ विह्विला पृव ही भावास्त्रिवा
 यः॥ नाल लिद्वयाः॥ विकारु नाली वृक्ष नावनः कूट नालिः विनिविह्व

१॥ (स्थानक शुकनासै कृदी च वृत्त कूटन ठा ॥ स्थानक श्वान लो विष्टारु ला ला मल की नि
 ४॥ नम मा च व य ॥ आ च त्रि लिङ्ग मु वि की म क ॥ नृ नृ मु ष ॥ क र्त्त रू लारू न वा स ॥ क लि
 ५॥ नृ रु या ल व य था व य ॥ आ च न ना म ना रु नी न की रु म व नी च न की (ध य मी
 ६॥ पी न द ॥ स न ल ॥ य नि का ॥ अ ध द मा ल न ॥ क लि का न ॥ य नि आ (आ ल क
 ७॥ च लि क्त्वा ऊ दू ॥ य न स ॥ क ल कि रु ला नि चू ला म्ब ऊ र्दे ऊ ल ॥ का का ह्म नि का रु म्

मेलनपूजयनरुला॥ अविष्टः सर्वगोपदहिष्ठु निर्यासमालका॥ विचूमर्दध्वनि
म्वधविचिन्तायुनर्णिगयः॥ कपिलारुस्मयकृशाणित्रीवम्बुकयीनन॥ रुक्मिण
ऽप्यथचाम्ययस्वम्बकाहमप्ययकी॥ नमस्कृतिकागन्धरुलीस्यादथकेशन॥ वक्
लोवश्श्रीः॥ (शाकः समीकनकपाठिमा॥ चाम्ययः केशनागकेशनः काश्चनाक
यः॥ जयजयन्तीनकात्रिनादयीवजयन्तिका॥ श्रीपद्ममणिमनूः॥ स्यात्कलिकाग

लिकात्रिका। उयाः थकुठ उः ११ को वल्लिकात्रिका। उगशे वकलिहिन्य
यवकदयवमूलं। रुक्मपाकरुनातिगुप्तमलः कनसदक॥ कालकन्येकमा
लः १२५। कापिः १२५। थमिन्दुवः १२५। सिन्दुवः १२५। मविमोनिः १२५। लीः १२५। दालिकेयपि॥ ४३
वलीखेवामनीदवनाकाजीमः १२५। थमिन्दुवः १२५। सिन्दुवः १२५। मविमोनिः १२५। लीः १२५। दालिकेयपि॥ ४३
का॥ रु॥ यदीगनहीयुः १२५। थमिन्दुवः १२५। सिन्दुवः १२५। मविमोनिः १२५। लीः १२५। दालिकेयपि॥ ४३

वसा॥ सिनाशोऽथ न स न सारु न वऽथ मा ग धी। वलिकायुधिकाऽथ स्यात्सायी नाहमय
 धिका॥ अ निमूकाऽथ लुकऽथा दासनीमा ववीलना। स्मनामालनी जा निऽस फलानवम
 लिका॥ मा ध्यं कूर्द न का क मु व न्का व न्जीव कऽस हा कुमानी न व लि न मान मु म
 हा स हा॥ न तु (अ) ले क नू व क स्म न्पी न क नू ल कऽनी ला मि ली द था व्वा ज दा सी चारु
 ग ल व स॥ अ नीय क मु जि ली स्या रु मि न् नू व काऽनू ले पी ना क नू ल का मि ली न मि न्

सरुचनीदथा॥ अरुपूष्य अरुवापूष्य वरुपूष्य निलस्यय न। पुनीलास ॥ नयासचकु
 नरुयमानका॥ कनवीन कनीन कुकुन वनिल्लावकी। उमरु॥ किनवा वरुकी वरु
 न॥ केनकादय॥ माकु लीमदम अरु लीमा कुलपुत्रक॥ रूलपुत्रावी जयवन
 चक्रामाकुल्लक॥ समीन लेमनूवक॥ प्ररुपूष्य॥ रूलि जक॥ जमीन इयथपकुस
 कठि अरुनकु (०) नकी॥ सिमरु जका॥ उपावी उवि उका वदिसि रूक॥ अकी दवसूका

रूगन वलनूपविकीन ॥ मना न अरुकोप ले ॥ अरु कु इल के प्रमाय सो। निवम लीप
 अरुप न काखी लावका वरु॥ वना वरुकादनी वरुनूला जीवकि के यपि। वलाद नीलिन
 नूला वरुची नकि का ॥ मना॥ जीवकि काशाम वलि विगल्या मधूपली पि। मूवीद वाम
 धून सोभा न गननी मूवा॥ मधूलिका वनू॥ (१) ली (२) यली पील पली पि। या ॥ म
 लाविद्व कली रूयनी (३) यसीन सा॥ न काखी लाया पचली याची ना वन निकि का। कद॥

कठ मूना (भा) कभाहिनी कठूनाहिनी ॥ मल्लयि का कृष्णदीप काजी धा कलादनी ॥ श्र
मभुफा ककाश्चला कलूना पाव मायनी ॥ मयया का धक गिमिः कपि कचू धमक
दी ॥ सिधो पसिधोऽन्य (भा) धाडव नी सम्वनीववा ॥ प्रत्यक (ध) ली सु म (ध) ली न लामु वि
कप' धपि ॥ मयामाग्नेः (ध) रविका धमाग्ने व मय न को ॥ प्रत्यक यलु की धय लु किलि
ही रव नम' अनी ॥ रुडिका वा दनी पद्मार्गो वा दनी लशट्टिका ॥ मज्जान वल्ली वाल यभा

कवचनवर्द्धकाशमञ्जिराविकसाडिङ्गीसमस्तकालमयिका॥मल्लकपल्लुरुल्लनीरु
ल्लथाजनवल्ग्यापि।याशायवासादस्यल्लप्रनयसः॥कुलसकभाभोदनीकचूनां
नासूमादनालम्।पञ्चपल्लवधकपल्लुचिह्नपल्लुधिवल्लिका॥कोष्ठीविना
सिंहपञ्चकलसिद्धावनिर्गुला।निदिष्टिकोशस्यशीवाघीवृक्षनीकल्लकात्रिका॥पुष्पाद
नीकुलीकुडादुपगानादि कल्पयि।नीलीकालाङ्गीनकि काशमील्लमयपल्लिका॥

नञ्जनीशीरुला नु नु रू ली दा ला च नी लि नी । अ व लु ज १ साम वा जी सू व ली साम व
लि का ॥ काल भषी रु रु ला वा नु जी य नि रु ला पि । कृष्ण य कृ त्या वे द दी मा व भी च य
लोक ला ॥ उ व ल पि य ली शो ली को ला थ क वि पि य ली । क पि व ली को ल व ली । श्र य सी
व सि न १ य मा न ॥ च य नु च वि र्क का क वि क्षी नु । अ रु रु रु ला । य ल रु या लि रु ग न्ध व द
स सा दू क रु क १ ॥ (अ क रु को) न न का व न १ रु रु रु रु ला पि वि ध्वा वि षा य नि वि षा नि

४८

वि षा य वि षा नू ला ॥ ११ मी म रो ष र्थ सा थ की या वी दृ ष्टि का स मा । ग न मू ली व दू सू गारी
नू रिं न्दी व नी व नी ॥ म षा यो का री नू य गी ना या य १ १ मा व नी । अ रु नू य थ पी न रु का
ल य क रु नि द व १ ॥ दा वी य र्च य वा दा नू रु नी दा य र्ज नी य पि । व र्च १ ग न्ध व दू नू
(अ ला मी) ग न य वि का ॥ १२ क र म व नी व दू मा रु रिं क्री रु वा स का । व र्च १ रु व १ रिं
ला थो वा स का वा डि द रु क १ ॥ अ रु रु मा नि नि क लु यो वि षु का ना य ना मा । १३ रु र्ग व

कु का लकु का कि ला के कु न कु ना ॥ गाल य ॥ ह्या डी ग वि व श्रु कु म वू नि का मि सि ॥ मि
श्र या य थ भी दू (अ व द्र ड् ॥ म क स री ग ग ॥ सम न दू द्वा र्थ व ल म मा घा वि नु म ल
। न नू ल ष्व क मि द्र ष्व वि उ ड् म नू न र्प स र्क ॥ व ला वा द्या ल का य अ न वा कु ण ल प थि का ५२
। म धी का (षी रु नी डा का खा दी म वू न र्प मि व ॥ स र्वा नू नू मि सू व हा वि य ठा वि व गा वि व
गू वि रु छी न व नी ष्या मा पा लि न्थी रु सू ष नि का ॥ का ला म यू न वि द लां ड्र च न्द्रा का ल म

वि का। म धू र्क की ग र्क य वि म वू का म वू य वि का ॥ वि द नी की न ड्र कू दू ग न्थ का (प्री यः
या सि गा। अ न्था की न वि द नी ष्या न ला (ष्व ग र्क ठा नि का ॥ ला ड्डी ली गाल दी ना य वि य
ली ण कू ला द नी। ख ना ष्या का न वी दी ष्या म यू न ला च म रु क ॥ (षी यी ष्या मा ष्या नि वाः
या ष्य मू द्वि ॥ सि द्वि ल श्रौ व ड्र न या क या र्छ म। क द ली वा न ल वू सा न मा मा र्ग ड्र म रु
ला ॥ का षी ला मू ड्डी न र्क ड्र का क म ड्रा स र्क य वि। वा ला की दिं ठु ली सिं दी रु ली की दू १५

धर्षणी॥ नाकलीसूत्रसात्रासासूत्रं नान्वनाकली॥ नकुलेश्वरु रुद्रा कीचु काकीसू
 वलावसा॥ विदानी नान्वं मनीषालपलु श्लिलाकवा॥ कुक्रिकनीसमजान्ना कार्योसाव
 दनं निरासाव दानी सुसाव न्या धीगुपमका वृष ॥ गाह नुकीना वलापमा दस्यन
 वधूका॥ अमाज्जवाद्या षकः ॥ यान्मराजालीसपीनकः ॥ श्रीस्त्रीपठालिका जालीनादः
 यीरुमिजम्बुका॥ याल्हाङ्गलिक्कणिगिराका काङ्गी काकनासिका॥ अथपदी सुसुवर्

३०

मूसलीगालमूलिका॥ मूजष्टङ्गी विषलीया॥ झाजिजावर्षिकसम॥ नामूलवल्लीगाम्बूनी
 नाववल्गुपथदिजा॥ रुनलूनलकाकीकीकविलारुध्मठानिनी॥ नलवालुकमेलय
 सूत्रं विरुत्रिवालकी॥ वालुकशथवालकामुकन्दः कुन्दकुन्दवृ॥ वालकीवनवदिष्टा
 दीर्घकेशमूनामव॥ कालानुसार्यमृज्जधमप्यमीतगिवा निरु॥ (डीलर्य गालपलु
 दुदया नान्वकूठीमूना॥ गान्धिनी गजुरुद्रा सुसुवर्लासूत्ररीनसा॥ मरुनलकन्दनकीसि

ली की जादि नो गिरे । अष्टि जाला सुकि कुरु । न की अरु यथि का ॥ पथी कान न्यवा
 ले ली निष्कृति वरु लाध सा । सु श्रो य कुरि का कुरु का कान न्नी कुरि य जयै छि ॥ वाधि १
 कुरे पात्रि राय्य वाय्य या कलम ल्यल । र्ण खनी चान पथी श्या क्ति नि यथ विरु न्न क ३१
 ॥ मा य म ली अ य म ली गि वा न म ल की नि वा य यो शु नी क म्पो ल्य म य कुरु न्न १ क व न
 क ॥ कै लि १ क रू १ कान्क ल की न दी व द्वा थ न क सी त लु व न रु न क म दू य ग म ह

सै का ॥ या अयु र्थ या घन र्व कन अं च क कान र्क । शु वि ना वि द्र म ल ना क था न कि
 न्नी न ली ॥ य म न्य अ न क णी च रु न रु रु वि ला सि नी ॥ शु कि १ र्ण ख १ ख न १ काल द
 ल न्न र्व म थो र्क की ॥ का की म ल्ता कुरु व नि का म्पु ल ल क सु रा रु अ । कुरु न्न च न्द षा य
 न्ना ल र्थ य नि य ल र्व ॥ पु व (भा पु न्ना न द्द क व र्क म्पु ल कानि र्व ॥ शु नि य ल्पु शु
 क म्पु लि १ पु र्थ श्रो (रा य कुरु कुरु ॥ म न्ना ल कुरु वि शु ना य का द वी ल ना ल य १ स म्

[illegible][illegible]

म्वाकृष्णीकानवीवसनल्लुप्रसाजिनी॥ गस्यांकदूम्रवात्रावला रुद्रवर्लनि
 चाजनीरुहकात्रजनीरुहकचक्रवर्दिनी॥ सूर्य(ग)धरादीगन्धमूलीषट्शक्ति
 केशयि। कर्तृत्राशयिपला(ग)पिकालवर्ल१कटिलक१॥ सुखवीराथकुलकपटा
 लसिकक१पट्ट१कृष्णलुकमुककात्रनिर्वीरु१कर्कटीशुभो॥ ॐ क्राकृ१कट्टु
 वीश्यालुम्यासावृत्रसम। चिगुगवाक्षी(ग)दुम्राविशालातिन्दुवात्रुनी॥ ॐ (ग)ध्रु१श्रु

१४

नल१कन्दागलीनम्रसमष्टिला। कलम्योयादिकाजीमुमूलकंहिलभाविना॥ वासूकी
 शकुरुदा१सुदेवीरुगनयविका। सरुप्रवीर्याहज्योत्रहानकाधसासिना॥ (ग)
 लामीगनवीर्याचगल्लीशकलाकक१कृत्रविन्दोमयनामासूकासूककममि
 यी॥ स्याद्रुद्रमूककाशुन्दावृगलायकलाञ्छमा। व(ग)सकृसात्रकमोत्रत्वविसानर
 लधजा१॥ गनयदीयवरुलावलमस्कनकजनी१॥ वलव१कीचकारुसुथसन

नृनि लाद्रताः॥ अन्तिर्नाथर्वयन्वीशुन्दरुजनकः॥ शत्रुशान्तमुधमनः॥ याम
 गलारथकाधममिथ्या॥ ॐ कृष्णाय नमः॥ १॥ सिरुत्तिगुवत्तजाशत्रुसाल ॐ कृष्ण
 इदाः॥ पुष्पका नात्रकादयः॥ स्वादीनलमीवतर्नमूलः॥ शौभीनममिथ्या॥ अरुयन
 लदंभयाममलालः॥ लासर्ककलघूलयमवदारुष्टकायः॥ नलादय
 हलङ्गम्यामाकयुमूवाश्रयि॥ अश्रीकृष्णकृष्णदहः॥ यद्विगुमथकहृत्तीपोत्र

३३

शोभान्धिकव्यामदवज्जकभादिपि॥ कृष्णानि कृष्णया लक्ष्मीमालारुलककृष्णलक्षण
 वालरुलवाशायवर्सरुलमईन॥ रुलानां सिरुत्तिगुवत्तजाशत्रुसाल ॐ कृष्ण
 नाशक्रयमालानाविकनमुलाङ्गली॥ धाळागुपूठाः॥ कुम्भकोशुवाकः॥ स्वपूत्राः॥ शत्रु
 रुलमूद्वगमभवरुलनालसरुलमाश्रयः॥ स्वईनः॥ कनकीमालीस्वईनीवरुलक
 माः॥ ॥ वनीमभिवज्जः॥ ॥ ॥ सिंहामः॥ मन्दः॥ यशः॥ श्राव्यः॥ कः॥ सनीरु

[illegible]

(स्थ) न उ लू क मु वा य ॥ ना नि य च को ॥ वा या ठ ४ था रु न दा ज ४ ख ऊ नी ट मु ख ऊ न शा ला
 रु ए ष्ट मु क क ४ था द थ वा य ४ कि की दि वि ४ क लि ङ्ग रु ङ्ग ४ म्या ठा थ था च्चु गु य व क ४
 ॥ दा वी घा ङ थ सा न ङ्ग ४ आ क क षा म क ४ समा ॥ क क वा क साम च्चु ४ क क ट ष्व न ला य
 ४ ॥ च ट क ४ क ल वि ङ्ग ४ था रु थ श्री च ठ का र था ४ य म य थ वा च क न र्था य थ च ठ के व
 रि ॥ क क न ट ४ क न ट ४ था लू क ल क क नी स मी ॥ व न प्रि य ४ य न रु न ४ को कि ल ४ यि क

ॐ ह्यपि॥ काककुवनठानिष्टवल्लिप्यसंस्तुताः॥ कर्कातधा मयनरुद्रलिङ्गेष्व
 यसाक्षपि॥ डालकाकम्बु काकालादधूतः॥ कालकटुकः॥ आनायिचिल्लोदकायष्टो
 कीनष्टुकोसमी॥ कुदूकीः॥ अथवेकः॥ कङ्कः॥ पुष्पनाक्षसुसात्रसः॥ काकध्वजक
 कीनध्वजकयनामकः॥ कादम्बः॥ कालहंसः॥ सादलीशकनत्रोसमी॥ हंसाम्बुध्वज ३६
 गन्धर्वकाक्षामानसोकसः॥ राजहंसाम्बुगन्धर्वकवत्सल्लोहिमः॥ सितामलिन

मल्लिकास्थारुध्वजः॥ शिखरगन्धर्वः॥ शत्रुत्रिवाटिर्वादिध्वजलाकाविशकलिका
 । हंसस्थायविद्वन्ठासात्रसंस्तुतः॥ कुरुकर्जिनयनास्थायत्राष्टीनलपायि
 कावर्चलासदिकानीलासनघासवूमदिका॥ पद्मद्विकायुक्तिकास्थानृदंशीम्बुवन
 मदिका॥ दंशीनका निर्जलास्थानृदलीवनघदयाः॥ रुद्रात्रीसीनूकावीनामिलि
 काचसमाष्टः॥ समीपमङ्गलशोखधामाकागिनिदिनः॥ मधुवाममधुकनामधु

लिम्बव्यांतिनः॥दिनरूपयतिहृदयमद्यदुमयालयः॥मयूत्रावर्तितवर्तनील
कल्लुङ्गकैः॥लिखावतलः॥लिखीककीमयनादानूलास्यापि॥ककावाहीमयूनस्यः
समीचन्द्रिकमचको॥लिखावृजलिखकुमुपिचुवर्तनयसकाख(वविहंमविहं ३८
विहंममविहयसः॥शकनियदिशकनिशकनशकनद्विआ॥यमनिजक्रिय
मशयमरूपयुनथरुजाशन(मोकावाजिविकिनविकिनविविक्किनयमशयः॥नी

आहुवागनूनमः॥पिचुकानरुसङ्गमाः॥गवावि(गवाहानीगामकुः॥कात्रकुवः॥पु
वः॥मिहिनिकुकाकालावाजीवजीवश्चकात्रकः॥कायष्टिकमिहिरुकावरुकाव
रुकादयः॥गनून्यककुदाः॥पकुपमकुशमनूनहीमीयकमिः॥यकमूलककुश
ठिनूरुक्रियो॥यतीनांतीनसंतीनान्यमाः॥खमममिक्रियाः॥जलीकावाविहीनकु
लावानीकमक्रिया॥यामः॥याकाः॥रुकाठिमः॥पथकः॥भावकः॥लिङ्गः॥मीयूसोमि

पूर्णद्वन्द्वयुग्मं कुयुगलं युगलं ॥ समूहनिवरु ब्रूहस्पदविश्ववृक्षाः ॥ श्रीमद्भगवत्
 कनकावतारसंघातसंघातः ॥ समूहयः समूहयः समूहयः समूहयः ॥ मिथ्यानु
 संहतिर्वन्द्यं निवृत्तं कदम्बकं । वृन्दयः ॥ समूहयः ॥ समूहयः ॥ समूहयः ॥ ३०
 ज्ञातीयः ॥ कुलं युगलं निवृत्तं नृपयुक्तं । यद्यन्यं समूहयः ॥ समूहयः ॥ समूहयः ॥
 ॥ श्यान्तिकायः ॥ यजुःश्रीगणेशाय नमः ॥ कूटमस्त्रिया । कायावलीकमायुः नृपयुक्तं

निवृत्तं ॥ गृहसकाः ॥ यजुःश्रीगणेशाय नमः ॥ कूटमस्त्रिया ॥ ॥ शिवादिपञ्चशः ॥
 ॥ मनुष्यामानुषामर्षामनृजामानवानां ॥ यजुःश्रीगणेशाय नमः ॥ यजुःश्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ स्त्रीयाविदवलायावानां श्रीमन्मिनीवधूः ॥ यजुःश्रीगणेशाय नमः ॥ यजुःश्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ विष्णोः ॥ यजुःश्रीगणेशाय नमः ॥ यजुःश्रीगणेशाय नमः ॥ यजुःश्रीगणेशाय नमः ॥
 नी ॥ यजुःश्रीगणेशाय नमः ॥ यजुःश्रीगणेशाय नमः ॥ यजुःश्रीगणेशाय नमः ॥

योपि वसन्तः॥ क्वचिद्योऽपि कुर्यात्॥ वसन्तः दयितुं शक्यः॥ त्रिंशत् नथा॥ उवाच॥ यान्यथा यथापि
 दशमीर्षं सलक्ष्मी॥ वीनपत्नी वीनलक्ष्मी वीनमाता वीनसू॥ जानापत्यापजानाव
 पसुतावपसुता निका॥ स्त्रीनाम्निकाकाठनीत्या वदूनीसंश्रानिकसम॥ कात्यायन्यद्वेष्ट
 या॥ काषायवसनाववा॥ सनन्धीयनवश्रमस्तवश्रमलित्यकाविका॥ मृशिकीयादवष्ट
 या॥ येषां न॥ ४५॥ वानिनी॥ वानिनी गालिका वश्यनूपा वीवीथसाजन॥ सलक्ष्मीवाव म

स्थास्यात्कुटुनीशमृलीसम॥ विप्रश्चिकार्त्तकालिकादेव ह्यथनरुसल्ला॥ श्रीवामिन्य
 विनागुर्यामलिनीपूष्यवत्यपि॥ मरुमलयपूदकाविश्यादु॥ ४५॥ यमार्त्तव॥ शाङ्गल
 द्रोहदवमीनिकलाविशगारुवा॥ अथनसल्लास्यादु॥ विव्यनवनीवगद्विनी॥ गालि
 कादमृगालिकीवार्त्तवनीवगद्विनी॥ यूनकृदिविषूतूटादिरुस्थादिविषू॥ यम
 । सुकुदिजा॥ विविषू॥ सवयश्चकृद्विनी॥ कानीन॥ कन्यकाजा॥ ४६॥ माथसूरुग

सूक्त १। सोमो नयः १। स्यात्ता नमः १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १।
यिरुषसू १। सूक्तमाह १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १।
आसनी सूक्त १। कोलठयः १। कोलठयः १। कोलठयः १। कोलठयः १। कोलठयः १।
लठया विवात्मक १। आत्मक १। नयः १। सूक्त १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १।
सर्वे १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १।

सूक्त १। सोमो नयः १। स्यात्ता नमः १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १।
रुवग्नेयया नयः १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १।
न्या १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १।
कुल १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १।
मा मादुहि १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १। यस्मिन् यस्मिन् याथा १।

जीना जी (कुं) जय नमः ॥ वयो यान् द ग दमी छा यान् यत्र जस्र गि या इ ग ज ॥ ज द न
क स्य १ क नि ष ज वी या इ व न ज स न् ज ॥ क मां सा द र्व ल ष्ठ मा व ल वान् मां स लो इ ग
ल ॥ मु न्दिल मु न्दिक मु न्दी ट रु त्का कि १ यि चि लि ल ॥ क व टी टा इ व ना ठ ष्ठ इ व कु ट
न ठ ना गि क ॥ क श व १ क शि क १ क गी व लि ना व लि रु १ स मो ॥ वि क ला ष्ठ स थ ग ॥ ५३
स र्वो क स ष्ठ वाम न ॥ स व न ॥ १ स्या स व न ॥ सा वि शु मु ग न ना सि क ॥ स व न ॥ १ स्या

स व न ल स १ पु रु १ पु ग ग ज्ञान क ॥ उ र्द रु न्द रु ज्ञान १ स्या र्द रु १ र्द रु ग ज्ञान क ॥
स्या द उ व मि न १ क क ग द ल १ क क न क लि १ य मि न ल ग नो ॥ १ ॥ ल १ य मि न ल
मु म्भु मि न ॥ व लि न १ क क न र्वा रु स १ मि षु ज ना व ना १ क दू ल १ काल क १ यि पु मि
ल क मि ल काल क ॥ क्क ना म र्ग स्या द ना र्ग यि कि ल्हा न् क पु मि क्रि या ॥ रु ष जी ष व रु
ष छा न्य ग दा ज्ञा य त्रि य पि ॥ श्री न् शु ज वा य ना य ना ग वा मि ग दा म या १ क य १ ॥ १ ॥

व श्वयम्मावपुनिष्ठयम्भीनीनसः॥ श्री कृन् कृन् कृन् वः पृथि कासम्भी कृन् वः पृथि मान्।
 (श्री कृन् वः पृथि (श्री पृथि पृथि पृथि विद्यादिका॥ कि लासं सिधक कृन् यामयामावि
 चरि का। कृन् वः पृथि कृन् वः पृथि विद्यादिका॥ कि लासं सिधक कृन् यामयामावि
 ना कीवः पृथि मान्। कां मल लक कृन् वः पृथि कृन् वः पृथि मान्। कां मल लक कृन् वः पृथि मान्।
 श्या कृन् वः पृथि मान्। कां मल लक कृन् वः पृथि मान्। कां मल लक कृन् वः पृथि मान्।

विद्या विः श्री कृन् वः पृथि मान्। कां मल लक कृन् वः पृथि मान्। कां मल लक कृन् वः पृथि मान्।
 लय गद कृन् वः पृथि मान्। कां मल लक कृन् वः पृथि मान्। कां मल लक कृन् वः पृथि मान्।
 ॥ श्या कृन् वः पृथि मान्। कां मल लक कृन् वः पृथि मान्। कां मल लक कृन् वः पृथि मान्।
 न कृन् वः पृथि मान्। कां मल लक कृन् वः पृथि मान्। कां मल लक कृन् वः पृथि मान्।
 प्राणि शान की॥ श्या कृन् वः पृथि मान्। कां मल लक कृन् वः पृथि मान्। कां मल लक कृन् वः पृथि मान्।

दवनि १ (शुष्मचि १ शुष्मल १ कही ॥ न्यूकाहु (घनूजा वृद्धनाश कृत्ति लहुत्तिरु
किलासीति भाला १ न्यादकू सुकालमूर्तमूर्च्छिनी ॥ शुक्लमजात्र नसीवती जवार्थः
द्विधातिरा माय १ विरुं करु १ शुष्माश्रियाकुल गष्टयत्रा ॥ चिसिर्न नवर्ष मास
पललंक यमामिर्ष ॥ उरुर्ष शक मास स्या रुदलून विर्लि शर्क ॥ नूवित्र १ स (श
दिना मुत्रक रुमज (शातिर्न व काशु मास रुदयर्ह नो दशुवयावसा ॥ पश्चि

वाशिनामन्याना श्री शुभमसि १ शिवा ॥ निलर्क काममसि र्क (गार्द किर्द मला १ मि
या ॥ मूर्त पृतीर्न शुल्मशु प्री हार्यस्थपवस्रसा ॥ माय १ श्रिया कालखलु यलु नीकुस
भ १ म ॥ सुदि काशान्दिनी लाला दूषि कानेन यामर्ल ॥ मूर्त पृसावउ शर्नवस्त
नो भमर्ल शक नू ॥ पृतीर्न शुल्म वस्तु मशु विष्ठा विष्ठा श्रिया ॥ स्यात्कयेन १ कपाला १
श्रीकीकसं कल्यामसि च ॥ शाकुनीना श्रिक काल १ यस्तु रुक (घनूका ॥ शिवा १ शुभ

कथादिः श्रीपादसुनिधुपाशुना ॥ अहं पुनीका वयवार्थयत्ताथकलेवर्न ॥ अ
 ववपुः स रननं शनीनं वर्षविशरुः ॥ कायादहः कीवयसाः क्रियाम्भुकिमनू
 रुनूः ॥ पादाश्वयपदं पादः यदं पिष्टन (लाः क्रिया) ॥ नहुकीद्युठिकं लोपमा (३६)
 न्योष्टि न न तथा ॥ अंदाहुयसुना जानू नू जतोषीवदक्रिया ॥ सकिं कीवयमानू
 नू रुत्सन्निः पृष्टिव कल ॥ अदं लयानं पायूनीवसि न्नारुन (आदथाः) कठाना

(आलिहूलकं कठिः) (आलिः कू मनी ॥ पञ्चानि गम्यः श्रीकथाः कीव मुकुचन
 पुनः शक्यको मुनि गम्यः द्वयहीनक कन्दन ॥ क्रिया सिं चो कटीया था वृष्य
 वय मालयाः ॥ रुहं यानि दयाः सि (मम मद्राम रुन (गरुसा ॥ मूक्षः रुकावावृष
 लः पृष्ठवः ॥ अ न विर्क ॥ विवि लुक् कीज ० याद न मुर्द कूची रुनी ॥ चूच कनुक्
 वाश्रिया नना कोरुं रुजानन ॥ उवावसु श्रव रुष्ट पृष्ठ नुवनमनना ॥ रु (आमु

ङ जिभ्रिंसाः श्री सु भी नश्ये वङ्ग कुली वाद मूल उक्त की या श्वम श्री नथात्र वः॥
 मथम सवत्सु मथम श्री दो यत्रो दयाः। रुज वाद पुत्र वयादाः स्यात्कदा लिशु
 कर्पय ॥ मथ्यो पत्रिपु मः ॥ स्यात्पुकाष्ट नथ्यचाय वः। मथिव न्माद कनिष्ठ कनस्य
 कनसावहिः॥ पञ्चसाख गयः पात्रिस्तु र्नी स्यात्पुद जिनी। मथ्यु ल्यः कनसा खास्यः
 पृथ्वी मथ्यु द जिनी॥ मथ्यमाना मिकावापि कनिष्ठा र्वादिनाः कमा न्। पुनरुवः के

(३२)

वनरुहानखाः श्री नखनाः श्रियाः॥ पादः गालः आकः कृष्णः कृष्णः कृष्णः कृष्णः कृष्णः कृष्णः
 सकनिष्ठः स्याद्वि नखि द्वा दः मथ्यु लः॥ पात्रो वयः पत्र मलेयुः मथ्यु लः विस्तु र्नी मथ्यु लो दो
 सः रुनी सः रुनी सः पत्र मलो वामदः किल्ली॥ पात्रिस्तु कृष्णः मथ्यु लः मथ्यु लः मथ्यु लः मथ्यु लः
 न। पुकोष्टा विस्तु मकः बाः रुनी मथ्यु लः रुवः दया॥ सनतिः स्याद्वनतिः मथ्यु लः कनिष्ठः नमः
 छिना। वाभा वाकोः सकनः शास्त्र मथ्यु लः श्रियाः मकः॥ उद्भविस्तु मथ्यु लः पात्रिस्तु मा नथ्यो

नृपतिविष्णु। कल्लो गलापथी वायां शिवाविष्कन्धनख्यपि॥ कूमृशावातिनखासाव
 दूद्योछककाठिका। वक्राख्यवदनं कुलमाननं लपनं मूर्खं॥ कीवद्यालं गन्धव
 हाधाक्षनासाचनासिका। अष्टो धनोदुपदनं सुपोदधनवासासीश्वरः॥ श्याञ्चिर्वर्क १०
 गल्लो कपोली मल्यनाहनृपदानादधनादकावदास्मा लुहकाकुर्द॥ वसह्वावसन
 किं क्षापाणावापयस्यस्येकी॥ ललाठमलिकं (भाविनृपदेष्टा) कुर्वी प्रियो॥ कूर्चः

मञ्जी कुर्वी मर्मार्थगात्रकां कूर्कः कनीनिका। लावर्तनयनं ननुमी कर्णवक्षुर्नादि
 ती॥ दृष्ट्येवाशूनंतामृतादन्तवाग्रमप्रवासाया (जीन) वृथापत्नी कठक्षोपा
 द्धदधनं॥ कर्तुं शब्दशुद्धो (भा) नृपतिः॥ स्त्रीशवर्णशवः॥ उरुमार्गं शिवाः
 शीर्षं मूर्ध्ना नामसुकाः प्रियो॥ चिकुरः॥ कुन्मलावालः॥ कवः॥ केशः॥ शिवाः
 रु॥ गह्वरे कर्णिकं केश्यमलकाश्च कुन्मलाः॥ गिललाठ उमनकाः॥ काक

[illegible]

राजिष्ठात्राविष्णुर्वागुशादेर्लंक्रिया। अलङ्कारस्वारुनर्णयनिकात्राविरुषर्ण
॥ मर्त्यर्णवाधमूर्कटंकिनीर्णयनयसर्कचूजाममलिः। शिवात्रर्णमनलाहानमध्वग
शावालयार्थयानिगथापुत्रयार्थाललाठिकाकर्मिकाभालयर्णशास्त्रकर्णकर्मवर्ण
न॥ (ग) वयर्ककर्मरुणालमनर्यात्तलनिकास्त्रर्णश्यालमिकाध्वनश्चुनिकामी
किर्कश्चुना॥ रात्रामूर्कावलीयवर्चुनाशोभनयष्टिकश्चालनरुदायष्टिरुदाहृचु

शुक्रार्द्राभासनाशा॥ अर्द्धरात्रामालवकृत्कावलीकयष्टिकाशेवनरुद्रमालास्या
 सप्तविंशतिमोक्तिकेशा॥ अवापक४पालिलया१कठकमस्तथा३श्रिया॥ कयूनम
 ऊदकुल्यन्तुलीयकमूर्मिका॥ साकृन्नाहुलिमूलास्याकृद्धीकनरुद्रमाला॥ १२
 कप्रीभखलाकाश्रीसफकीवसनादथा॥ कीवसावसनवाथपूस्कृष्टस्वर्णविष्
 ।यादाऊदकुलाकाटिमोक्षीनानृप्या३श्रिया॥ हंसक४वादकठक४किंकिनीकृष्टघ

श्रिका॥ त्वकरुलकिमित्रामालिवश्रुयानिर्दशविष्॥ वाल्मीकीमादिरुलननुकाद्यो
 र्वादनचमकीषयकृमिकावाल्मीकाकर्ममन्त्रामर्ज॥ नृनादुर्ननिष्पुवागिग्न
 कश्चनवामन॥ गत्यादङ्गमनीययज्ञो नथावश्रुयायूर्व॥ यथाकुलोमकीषय
 वदुर्मूर्त्यमहावन॥ श्रीमद्वरुणस्याद्वदुनिवीर्गपारुर्नविष्॥ श्रियावद्वरुणवश्रु
 स्यादगा४श्रुवश्रुयादथा४देद्योमायामश्रुनाह४पवित्तलविशालना॥ पठचन

जीलुवर्गं समोनकाक कर्पोषो वज्रमाकादनी वास (ध्वल वसनमं शुक्रं ॥ सचन
 कः पलः श्रीया दवाजि हल लक्ष ठकः निचालः पुच्छदयः ॥ समोनल्लककव
 ली ॥ मन्त्रवीथीयसंद्यानयत्रिधनान्यः (॥ ५॥ शुक्रं प्रावार्त्तुवास (जी समो वरु
 जि का तथा ॥ संद्यानमूर्त्तुनीयः सुवालः कृष्णो सकः ॥ श्रियाः ॥ नीलः ॥ लः ॥ श्याः ॥ त्यावः
 नः ॥ हिमानिलनिवाजः (॥ ॥ मन्त्रावर्त्तु वज्रमाकादनी वास (ध्वल वसनमं शुक्रं ॥ सचन

[illegible]

मं॥ कश्मी नञ्माग्निगिरवतवाही कवा मर्क। नका र्कावपिशुन श्रीनली
 दिगवन्दन॥ या का ला का ज गु कु व या वा र ल को द्रु मा म य ४ ल व ड् ड द व क स
 मं ही र् र् रु म थ जा य क म्। का ली य क भू का ला नू रा य ४ थ स मा र्थ क॥ वं नि ८
 का र गु न् वा जा र् ला रु रु मि ज आ ङ्ग की। का ला गु र्व गु न् स्या रु न् म ड् ड ल्या म लि ग
 न्धि य न्॥ य क धू प ४ स ड् ड न सा र् ल स र्व न सा व पि। व द्रु न् थो ४ य थ व क धू प

कृति म धू प को। गु न् रु ४ पि लु क ४ स ड् ड या व न् ४ य थ व य न ४॥ धी वा सा व रु धू
 या ४ पि धी पि रु स न ल ड वा। म ग ना दि म् ४ म द ४ क म् रु नी रा थ का ल की क को ल
 की का म रु ल् म थ क प् न क म मि य ॥ प न सा न् य न् रु र् रु सि ना ग्रा दि म वा ल की
 । ग न् म सा ना म ल य जा रु दु धी र्व न् द ना ४ मि य ॥ न ल य मि रु क (४) गी र् रु वि र न् द
 न म मि य ॥ नि ल प लु रु प ग्रा ङ्ग न् न् ज न् न क व न् द न्॥ क व न् द न् रा थ जा नी का

ष अमीरुल सम। कर्पूना गुन कमुनी कक्का ले य क क द म ॥ अ न ल प
नी व रि। व क ॥ ४ ॥ दित ल प न। र क नि वा स या ग ॥ ४ ॥ शु श वि न वा सि न वि
व ॥ र र का ग न म मा ल्या यो य ॥ ४ ॥ रु द वि वा स न। मा ल मा ला मु जी
मू द्वि क ॥ म म म क ॥ ४ ॥ पु गु क गि र व ल मि पू ग न य क ल ला
म क। य्या ल म म इ ल मि स्या ल क ॥ ४ ॥ क क क क न न ॥ य रिः

१३

य क। कि पै म न सि गि र वा स्या यी उ ॥ ४ ॥ ख न। व च ना स्या ल य निः
स्य न्द ॥ म रा का ॥ ४ ॥ य नि पू क ना ॥ ४ ॥ उ य क न रू प व द ॥ ४ ॥ यो य
ग य न्नी य व न्। ग य न म क प य क प ल्य का ॥ ४ ॥ व द य स मा ॥
॥ ४ ॥ गु क ॥ क न्द का दी य ॥ ४ ॥ पु दी य ॥ ४ ॥ पी ० मा स न। स मू क क ॥
स म्पू क ॥ य नि ग ॥ ४ ॥ य म क ॥ ४ ॥ पु स म नी क क नि का वि स

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ दयार्थं सूर्यं वा दधौ च कनकाक्षतं ॥ ॥

॥

॥

॥

॥

॥

॥

॥

॥

॥

॥

॥

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥

॥

॥ स नमो भगवते वासुदेवाय ॥

आर्य समाज
ASHA ARCHIVES

1.383